भागीदारी को उत्साहित करना

किसी भी संगठन में 90 प्रतिशत काम उसके 10 प्रतिशत सदस्य ही करते हैं। यह बात रोटरी ज़्लब या किसी और संस्था के लिए तो चिढ़ाने वाली और असुविधाजनक लग सकती है, लेकिन प्रभु की कलीसिया के लिए यह आत्मिक विनाश का चिह्न हो सकती है। किसी भी मण्डली की सफलता के लिए भागीदारी होनी आवश्यक है, परन्तु कुछ भी हासिल करना कठिन नहीं है। इसमें कलीसिया के अगुओं के लिए एक अत्यन्त कठिन चुनौती है।

भागीदारीः ज़्यों?

कलीसिया के काम में भागीदारी आवश्यक ज़्यों है ?

प्रसन्नता की कुंजी

पहली बात तो यह है कि भागीदारी मसीही प्रसन्नता की कुंजी है। किसी स्थानीय मण्डली में व्यस्त अपनी पसन्द की और सामर्थ के अनुसार प्रभु की सेवा करने वाले लोग उस मण्डली के दूसरे सदस्यों की तुलना में अपने विश्वास में कहीं अधिक प्रसन्न तथा संतुष्ट हैं। कलीसिया में, ''ठाले बैठे उत्पात सूझे'' अर्थात बेकार लोग शैतान के हाथों की कठपुतलियां होते हैं, वाली कहावत अज़्सर सही होती है।

कलीसिया के विकास की कुंजी

दूसरी बात भागीदारी कलीसिया के विकास में प्रमुख भूमिका निभाती है। किसी भी संगठन में सफलता निजी लोगों की सक्रिय भागीदारी से ही मिलती है। नहेमायाह की अगुआई में यरूशलेम की दीवारें फिर से बनाई गई थीं ज़्योंकि ''लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा'' (नहेमायाह 4:6)। परमेश्वर की सहायता से इस्राएली सिपाहियों की एक छोटी सी टुकड़ी ने गिदोन की अगुआई में मिद्यानियों की बड़ी सेना को भगा दिया था ज़्योंकि ''वे ... अपने अपने स्थान पर खड़े रहे'' (न्यायियों 7:21)। कलीसिया पर भी यही बात लागू होती है अर्थात जितने लोग सक्रिय होंगे कलीसिया उतनी ही अधिक बढ़ेगी।

''चर्च ग्रोथ'' लहर जो कलीसिया के विकास का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने का एक प्रयास है, के संस्थापक डोनल्ड मैकगेवरन इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मिशन के क्षेत्रों में

सुसमाचार को फैलाने के लिए निजी लोगों की भागीदारी कलीसिया के लिए आवश्यक है। मैकगेवरन का निष्कर्ष जो बहुत सी परिस्थितियों में कलीसिया के विकास के अध्ययन से लिया गया था, नये नियम की शिक्षाओं पर फिर से ज़ोर देता है। प्रारम्भिक कलीसिया इतनी तेज़ी से कैसे बढ़ी? इसके बड़े – बड़े प्रचारकों के कारण? इसके बड़े – बड़े मिशनरियों के कारण? इसकी दार्शनिक लीडरशिप के कारण? कुछ हद तक। लेकिन मुख्यत: यह इसलिए बढ़ी क्योंकि मसीही लोग जहां भी जाते थे वहां वचन का प्रचार करते थे (प्रेरितों 8:4)। सिकंदरिया, अन्ताकिया और रोम की बड़ी – बड़ी कलीसियाएं किसी प्रेरित के प्रचार से नहीं बल्कि विश्वास के उन अनाम नायकों के प्रयासों से बनीं जिन्होंने वहां जाकर रोज़ी रोटी कमाने के लिए काम करते हुए अपने पड़ोसियों को मसीह के बारे में बताया था। इसी प्रकार, आज एक नियम के रूप में संसार में प्रभु की कलीसिया कलीसिया की सेवकाइयों में भाग लेने वाले सदस्यों के प्रयासों के कारण ही बढ़ती है।

शायद भाई फलेविल यीज़्ले की यह खोज बहुत महत्वपूर्ण है[1]: किसी मण्डली का विकास इसके सदस्यों की विभिन्न भूमिकाओं में भागीदारी के अनुसार नहीं बल्कि जितना कलीसिया के सदस्य योगदान देंगे कलीसिया उतनी ही बढ़ेगी।

अगुआई करने का लक्ष्य

तीसरा, अगुओं का प्रमुख लक्ष्य प्रत्येक सदस्य की भागीदारी होना है। कलीसिया के अगुओं का लक्ष्य केवल अपने आप या मुख्य रूप में स्वयं काम करना नहीं है। बल्कि यह तो परमेश्वर द्वारा सभी सदस्यों को दिए गए गुणों या योग्यताओं से कलीसिया की सेवा करने के योग्य बनाने के लिए है।

भागीदारी: कैसे?

जो कुछ कहा गया है उससे कोई भी असहमत नहीं होगा। हम सब जानते हैं कि भागीदारी एक अच्छी सदस्यता व कलीसिया के विकास की कुंजी है, और कलीसिया के अगुओं का काम सदस्यों को योगदान देने के लिए उत्साहित करना है।

समस्या यह आती है कि कलीसिया के काम में सदस्यों को साथ लेना कठिन होता है। कलीसिया के अगुवे कई बार कोशिश तो करते हैं परन्तु सफल नहीं होते। भाग लेने के लिए इकट्ठा करने के उनके सभी प्रयासों के बाद, बहुत से सदस्य अभी भी दर्शक बने दूसरों को काम करते हुए देखने वाले रहते हैं। इसलिए ''कैसे?'' का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है।

सदस्यों की भागीदारी के बारे में किसी भी प्रकार का सुझाव प्रयोग मात्र है; किसी भी योजना की सफलता की कोई गारन्टी नहीं दी जा सकती है। फिर भी समाधान निकालने के लिए कुछ ढंगों पर विचार करना ठीक रहेगा।

उचित परिप्रेक्ष्य

पहली बात, कलीसिया के अगुओं में समस्या की सही समझ विकसित करने की

आवश्यकता है। विशेषकर उन्हें निम्नलिखित बातों का अहसास होना आवश्यक है:

(1) सारे सदस्य कभी भाग नहीं लेंगे। इसलिए उन्हें उन सदस्यों का धन्यवाद करना सीखना चाहिए जो भाग लेते हैं। निराशा अच्छे नेतृत्व की बहुत बड़ी शत्रु है। यदि कोई अगुआ बहुत निराश हो जाता है, तो वह निष्क्रिय या असफल हो सकता है या यह हो सकता है कि उसकी निराशा देखकर भाग लेने वाले लोग भी पीछे हट जाएं।

(2) आम तौर पर सदस्य प्रभु के काम में इस तरह लगे होते हैं जिसका कलीसिया के अगुओं को पता नहीं होता। हो सकता है कि वे किसी को कार्ड भेज रहे हों। आने वाले लोगों का स्वागत कर रहे हों, अस्पताल में बीमारों को देखने जाते हों, अलग - अलग तरह से मिशन कार्य में सहयोग दे रहे हों, मसीह के नाम में अपने पड़ोसियों से भलाई कर रहे हों आदि। हो सकता है कि ऐल्डरों और प्रचारकों को यह लगे कि वे ''कलीसिया के (किसी विशेष) कार्यक्रम'' में भाग नहीं ले रहे हैं।

(3) हो सकता है कि कुछ सदस्य सचमुच विशेष परिस्थितियों के कारण (पारिवारिक स्थिति, बीमारी आदि) विशेष कार्यक्रमों में भाग न ले रहे हों। कलीसिया के कार्यक्रमों के किसी काम में भाग न लेने वालों का न्याय करके दण्ड देने से बचना चाहिए।

(4) कुछ सदस्य कलीसिया की हर गतिविधि में भाग नहीं लेते ज़्योंकि ऐसा करने से उनके परिवार में परेशानी आती है। कई बार बच्चे, नवयुवक और बुज़ुर्ग मसीहियों ने अपना - अपना काम करना होता है और वे इकट्ठे नहीं आ सकते। हो सकता है कि कलीसिया के हर कार्यक्रम में भाग लेने वाले परिवारों के पास कई - कई हज़्तों तक अपने परिवार के लिए समय न हो।

सही शिक्षा

कलीसिया के अगुओं को लोगों को वही शिक्षा देनी चाहिए जो तोड़ों के विषय में बाइबल देती है। इस शिक्षा में यह बात शामिल होगी कि ''आराधना में अगुआई'' करना ही सदस्यों द्वारा कलीसिया के काम में भाग लेना है। इसमें निम्न बातों की शिक्षा भी शामिल होगी:

(1) हर गुण परमेश्वर की ओर से मिलता है। ''हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है'' (याकूब 1:17ख)।

(2) हर मसीही को कोई न कोई तोड़ा अवश्य मिला है। देह में कोई ऐसा सदस्य नहीं है जिसके पास कोई ''तोड़ा न हो,'' बिल्कुल वैसे जैसे तोड़ों के दृष्टांत में (तोड़ा धन को कहा गया है) कोई दास ''बिना तोड़े'' के नहीं था (मत्ती 25:15)।

(3) मसीही होने के कारण हमें बिना यह सोचे कि हम कितने बड़े हैं अपने तोड़ों को पहचानना चाहिए। पौलुस ने रोम के मसीहियों से आग्रह किया था, ''मैं ... तुम में से हर एक से कहता हूं, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे'' (रोमियों 12:3)। इससे हमें अपने आपको बेचारे समझने या अपने

तोड़ों का इन्कार करने की शिक्षा नहीं मिलती है। बल्कि इससे यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने तोड़ों का मूल्यांकन गंभीरता से करना चाहिए और उनके कारण घमण्ड नहीं करना चाहिए।

(4) मसीही लोगों को अलग - अलग तोड़े दिए गए हैं।

(5) हर तोड़े का महत्व है। मसीही लोग एक दूसरे से इस तरह जुड़े हुए हैं कि जो कुछ एक व्यक्ति अपने तोड़े से करता है उसका असर सब पर पड़ता है। जब एक को कष्ट होता है तो सभी दुखी होते हैं; जब एक को विजय मिलती है तो सभी आनन्दित होते हैं (1 कुरिन्थियों 12:25, 26)। अलग - अलग सदस्य अपने अलग - अलग गुणों से मिलकर देह के कामों को सक्षम बनाते हैं।

(6) मसीही होने के नाते हमारे लिए यह आवश्यक है कि हमें जो भी तोड़े मिले हैं, उनका इस्तेमाल हम पूरी कोशिश से करें (रोमियों 12:6-8)। तोड़ों के दृष्टांत से यही शिक्षा मिलती है कि हम या तो जो कुछ हमारे पास है उसका इस्तेमाल करें या फिर उसे खो दें! इससे यह अर्थ भी निकलता है कि हमें अपनी योग्यताओं को और निखारना चाहिए।

(7) हमारे लिए अपने तोड़ों का इस्तेमाल दो कारणों से करना आवश्यक है: (क) परमेश्वर की महिमा के लिए और (ख) भाइयों की सहायता के लिए। ''जिसको जो बरदान मिला है, वह उसे ... एक दूसरे की सेवा में लगाए। ... जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट हो'' (1 पतरस 4:10, 11)।

(8) परमेश्वर हम में से हर एक से हिसाब पूछेगा कि हमने उन तोड़ों का इस्तेमाल कैसे किया जो उसने हमें दिए थे। हम भण्डारी हैं (1 पतरस 4:10), और भण्डारियों से हिसाब मांगा जाना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 4:2)।

(9) कलीसिया के अगुओं का काम सब सदस्यों के लिए कलीसिया की बेहतरी के लिए उनको मिले तोड़ों का इस्तेमाल सक्षम बनाना है।

उत्साहित करने वाला माहौल

कलीसिया के अगुओं को चाहिए कि ऐसा माहौल तैयार करें जिसमें सदस्य अपने तोड़ों का इस्तेमाल आज़ादी से कर सकें। उत्साहित करने वाले माहौल के लिए एकता, स्नेह, संगति, आनन्द, एक दूसरे का आदर करना और उत्साह बढ़ाना आवश्यक है। सबसे बढ़कर कलीसिया का माहौल ऐसा होना चाहिए जिसमें कोशिश करना और असफल होना बुरा न माना जाता हो।

किसी ऐसे दफ़्तर या दुकान में काम करने की कल्पना करें जिसमें आपको लगे कि आपके साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता या आपके काम की प्रशंसा नहीं होती। क्या आप वहां अपनी पूरी कोशिश से काम करना पसन्द करेंगे? इसी प्रकार कलीसिया में यदि झगड़ा रहता हो या कलीसिया के सदस्यों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता हो, उनकी सराहना न की जाती हो या उनकी उपेक्षा होती हो तो कलीसिया के अगुवे लोगों से काम करने की उम्मीद नहीं कर सकते?

अगुवे सकारात्मक वातावरण कैसे तैयार कर सकते हैं ? उत्साहित करने वाला माहौल तैयार करने के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:

(1) हर सदस्य को समझाएं कि वह देह का महत्वपूर्ण अंग है। इसके लिए यदि कलीसिया के अधिकतर लोगों को नाम से बुलाएं तो अच्छा रहेगा।

(2) सदस्यों में स्नेहपूर्वक सज़्बन्ध बनाने की इच्छा करें। कमियों और मतभेदों के बावजूद, एक दूसरे से प्रेम करने के लिए एक दूसरे को स्वीकार करना आवश्यक है; बिना आरोप लगाए या किसी की आलोचना किए, एक दूसरे की सहते हुए, एक दूसरे को क्षमा करते हुए सराहना और प्रशंसा करके सहायता करना। ऐसे सज़्बन्ध मजबूत करने का एक ढंग सदस्यों के लिए एक दूसरे के घर में इकट्ठे होकर, घरों में और प्रार्थना भवन में इकट्ठे होकर भोजन करके अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। जितना हम एक दूसरे को अच्छी तरह जानते होंगे उतना ही अधिक हम एक दूसरे से प्रेम करेंगे और सराहना करेंगे।

(3) सदस्यों को कलीसिया के बारे में सकारात्मक व्यवहार अपनाने में सहायता करें। एक नियम हो कि एक दूसरे से बातचीत करते समय सकारात्मक व्यवहार अपनाया जाए। जहां तक सज़्भव हो, कलीसिया द्वारा किए गए हर काम को अच्छे से अच्छे ढंग से करने की कोशिश की जाए। बहुत सी मण्डलियों में निज़्न प्राप्ति, फिर निराशा और उससे भी निज़्न प्राप्ति का एक चक्र रहता है। इस चक्र को तोड़ देना चाहिए। यह ज़ोर देकर कि परमेश्वर विश्वास से किए गए प्रयासों से प्रसन्न होता है सदस्यों को उत्साहित किया जा सकता है।

उचित उदाहरण

कलीसिया के अगुओं को लोगों में नमूना पेश करना चाहिए। यदि सदस्यों को कलीसिया के अलग - अलग कामों में भाग लेने के लिए कहा जाता है, तो उन्हें अपने अगुओं के भाग लेने की उज़्मीद रखने का भी अधिकार है। प्रचारक और ऐल्डर अपना नमूना देकर सबसे अच्छी तरह सिखा सकते हैं (1 पतरस 5:3)। किसी ने कहा है, ''लोग शिक्षा के बजाय आपके व्यवहार से सीखते हैं।'' यदि अगुवे सेवक वाला व्यवहार लोगों में दिखाते हैं, तो आशा है कि उनके साथी उनके इस व्यवहार को ''अपनाएंगे।''

उपयुज़्त सेवकाइयां

अगुवे (1) सर्वेक्षणों का इस्तेमाल करके जिनमें सदस्यों से उनके तोड़ों, दिलचस्पियों और शिक्षा के बारे में पूछा गया हो, (2) मूल्यांकन करने और ध्यान से सुनकर यह देखने के लिए चौकस होकर कि सदस्य ज़्या करना चाहते हैं और ज़्या कर सकते हैं, और (3) सदस्यों को अपने गुणों को खोजने और उन्हें विकसित करने का अवसर देकर उनकी योग्यताओं का पता लगाने की कोशिश कर सकते हैं।

कलीसिया के अगुवे यह जानने के लिए कि मण्डली में ज़्या - ज़्या सेवकाई हो सकती है, ज़्या - ज़्या काम किए जाने चाहिए और किस-किस काम में भाग लेना चाहिए, खोज कर सकते हैं। बार - बार सेवा करने के ऐसे अवसर मिलते हैं जिनका पता नहीं चलता है।

उदाहरण के लिए, कलीसिया के शिक्षा से जुड़े कार्य के लिए न केवल शिक्षकों की बल्कि प्रबन्धकों, कलाकारों, साहित्यकारों, सचिवों आदि की आवश्यकता भी होती है। खोज से यह पता – चल सकता है कि प्रत्येक सदस्य के करने के लिए कलीसिया जो भी सेवकाई कर रही है उसे कैसे बढ़ाया जाए।

एक और ढंग मण्डली से सेवकाइयों या उन कामों के बारे में जिनमें वे सेवा करना चाहते हों, उन्हें अधिकार देने और उन कामों को करने के साधन उपलज़्ध कराने और फिर उन्हें करने की छूट देने के बारे में सुझाव लिए जा सकते हैं।

फिर कलीसिया के अगुवे सब सदस्यों को बता सकते हैं कि कौन – कौन से कार्य किए जा रहे हैं या किए जाने आवश्यक हैं। मण्डली को सेवा के लिए अवसर बताने से लोगों की भागीदारी अज़्सर बढ़ जाती है।

सदस्यों को प्रेरणा देना

भागीदारी को प्रोत्साहन देने के लिए, कलीसिया के अगुओं को प्रेरणा देने के उपयुज़्त ढंगों का इस्तेमाल करना चाहिए।[2] सही ''माहौल'' बनाने के लिए बड़ी प्रेरणा की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन हो सकता है कि इसका लाभ कुछ भी न हो। प्रेरणा देने के लिए अगुवे ज़्या कर सकते हैं। (1) योजना में, वे मण्डली के लिए हर सज़्भव कार्यक्रम में योगदान दे सकते हैं। (2) वे कार्यक्रम को तैयार करने और उसकी योजना बनाने के लिए सदस्यों को साथ ले सकते हैं, या किसी तरह उनकी दिलचस्पी बढ़ाने के लिए सहायता कर सकते हैं जिससे उन्हें लगे कि यह ''हमारा कार्यक्रम'' है। (3) वे सदस्यों को समय – समय पर किसी कार्य को शुरू करने से पहले ही उसके बारे में जानकारी दे सकते हैं। (4) उसके विस्तार के लिए सामग्री बहुतायत से उपलज़्ध कराई जा सकती है। बाहर के लोगों तक पहुंच बनाने के लिए तैयार किए गए विज्ञापन से भी मण्डली के लोगों को प्रेरणा मिलती है। (6) वे सदस्यों से उनके लिए किसी विशेष बात में शामिल होने की अपील कर सकते हैं: इससे उनकी आवश्यकताएं कैसे पूरी होंगी ? (7) वे कार्यक्रमों की योजना बनाते हुए मन में लोगों की ''वास्तविक जीवन'' की सीमाओं और समस्याओं को ध्यान में रख सकते हैं। (8) वे सार्वजनिक घोषणाओं पर निर्भर रहने के बजाय निजी तौर पर लोगों से बात कर सकते थे।

सारांश

देह ही कलीसिया की तस्वीर है जिससे भागीदारी की आवश्यकता का पता चलता है। मानवीय देह के चलने की कल्पना करें। सफलतापूर्वक चलने के लिए, देह के हर अंग को चलने का आभास होना आवश्यक है अर्थात न केवल टांगों तथा पैरों को, बल्कि भुजाओं, कंधों, गले, हृदय, फेफड़ों, आंखों, दिमाग और देह के हर दूसरे अंग को अपना काम करना आवश्यक है। बेशक केवल एक टांग वाली या बिना भुजाओं वाली केवल फेफड़ों से काम करने वाली देह में चलने की क्षमता तो है, परन्तु ऐसी देह को अपंग कहा जाता है। पूरी क्षमता से काम करने के लिए देह के प्रत्येक अंग को ठीक ढंग से काम करना आवश्यक है।

इसी प्रकार कलीसिया केवल कुछ सदस्यों के भाग लेने से लंगड़ाकर चल तो सकती है, परन्तु सफल होने के लिए हर मसीही का इसके कार्यों में भाग लेना आवश्यक है। इफिसियों 4:15, 16 कहता है:

> ... प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिणाम से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

''हर एक जोड़ की सहायता'' से, देह बढ़ती है और प्रेम में अपने आपको बनाती है! इस व्यवहार को अपनाकर हर सदस्य अच्छा करेगा:

> अकेला मैं ही हूं,
> लेकिन मैं एक ही हूं।
> मैं सब कुछ नहीं कर सकता,
> पर मैं कुछ न कुछ अवश्य कर सकता हूं
> और मैं जो कुछ भी कर सकता हूं,
> उसे मैं परमेश्वर के अनुग्रह से करूंगा।

पाद टिप्पणियां

[1]ज्लेविल आर. यीज़्ले, जूनि., *व्हाय चर्चज़ ग्रो,* 3रा संस्क. (ब्रोकन ऐरो, ओज़्ला.: क्रिश्चियन कज़्युनिकेशन्ज़, 1979), 42-45. [2]देखें कोय रोपर, ''मोटिवेशन,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* 15 (अंग्रेज़ी दिसज़्बर 1994), 41-43.